Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 21 May 2014 07:57

□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□□□

□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□□□□□

□□□□: गुजरात केपाटन जलिे की रानी की वाव (बावड़ी) को वशि्□व वरिासत का दर्जा मलिने केसाथ उम्□मीद की जा सक्ती है अगला नम्□बर यूपी के लखनऊ या वाराणसी की वरिासतों का हो जा□□ हालांकि भारतीय पुरातत्□व सर्वेक्षण केनवनयिुक्□त महानदिेशक डॉक्□टर राकेश तवािरी इस बारे में कोई ऐलानयिा बात तो नहीं करते हैं, लेकनि उनका यह तो कहना है ही कि यूनेस्□को में यूपी केजनि मामलों को वशि्□व वरिासत दर्जा दलिाने की बात की जा रही है, उनमें वाराणसी, सारनाथ और लखनऊ का ईमामबाड़ा भी है□ सात मंजलिी वाव बावड़ी को इस साल ही यूनेस्□को से वर्ल्□ड हेरटिेज केतौर पर मान्□यता मलिनी है□ राकेश तवािरी आज लखनऊ में थे□ कुछ ही दनि पहले भारत सरकार ने उन्□हें भारतीय पुरातत्□व सर्वेक्षण वभिाग में महानदिेशक पद पर नयिुक्ति पर अंतमि मुहर लगायी थी□

मूलत: देवरयिा/ बस्□ती से जुड़े, बसिवां (सीतापुर) में जन्मे अन्□तत: लखनऊ नविासी हो चुके राकेश तवािरी छह महीना पहले ही यूपी पुरातत्□व वभिाग केनदिेशक पद से रटिायर हु□ थे□ सन-78 में सर्वेक्षण सहायक केपद से होते हु□ वे सन-89 को वे वभिाग में नदिेशक बने थे और इस पद पर वे सन-13 में सेवानवृित्□त हु□□ राकेश तवािरी का नाम तो तब धूमकेतु की तरह चमका, जब उन्□होंने हड़प्□पा और मेहनजोदाड़ो की सभ्□यता के समानान्□तर गंगा नदी की घाटी में कसिी सभ्यता को खोजने केलि□ संत कबीर नगर (खलीलाबाद) केलहुरादेवा क्षेत्र में उत्□खनन कयिा□ यह काम राकेश तवािरी केनरि्देशन में ही हुआ और उसमें स्□पष्□ट पता लगा कि लहुरादेवा की सभ्□यता ईसा से सात हजार साल से लेकर बुद्ध-काल यानी ईसवी सन की प्रारम्भकि शताब्दियों तक की थी और यह पूरी तरह समृद्ध थी□ इतना ही नहीं, लखनऊ की छतरमंजलि इमारत को सीडीआरआई केकब्□जे से हटाकर उसे पुरातत्□व वभिाग को सौंपने की कवायद राकेश तवािरी ने ही की थी□ प्रस्□तुत है राकेश तवािरी केसाथ हुई बातचीत केअंश□

□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ ?

दरअसल, नेशनल ज्□योग्राफी सोसायटी ने वशि्□व की महानतम संस्□कृतयिों पर बातचीत करने केलि□ □क वार्ता-श्रृंखला छेड़ी है□ इसकी पहली श्रृंखला ग्□वाटेमाला में पछिली बार हुई थी□ इस बार टर्की का नम्□बर आया□ और मैं वहां आमन्त्रति था□

वर्ल्ड हेरिटेज की लाइन में है वाराणसी, लखनऊ का ईमामबाड़ा और सारनाथ

Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 21 May 2014 07:57

इसमें आपकी उपलब्धि?

मिस्र, मेसोपोटामिया, माया, हड़प्पा और चीन की संस्कृतियों को इस सोसायटी ने अपनी श्रृंखला में शामिल किया था। सोसायटी के लोगों ने मुझे गंगा-घाटी की संस्कृति पर व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया था। दरअसल हड़प्पा संस्कृति की ही समानान्तर काल है गंगा-घाटी की संस्कृति। गंगा-घाटी संस्कृति दरअसल नवपाषाण काल यानी नियोलिथिक एज की है।

पुरावशेषों और कलाकृतियों को दर्ज कराने के लिए एक अभियान छेड़ा गया था। उसका क्या हुआ?

सन-72 में ऐसा अभियान छेड़ा गया था। उसके बेहिसाब लाभ मिले। इस समय भी इस अधिनियम के तहत कार्य हो रहा है। यह दायित्व होता है सरकार का। लेकिन ऐसे में दर्ज सम्पत्तियों का खुलासा किया जा पाना न तो उचित होता है और न ही सुरक्षित।

हाल ही में बिहार के राजगीर पर्वत से चार जैन मूर्तियां चोरी हो गयीं। क्या आपके विभाग की व्यवस्था इसके लिए जिम्मेदार नहीं?

यह विभागीय व्यवस्था के साथ ही कानून-व्यवस्था की भी बात है। मगर इससे भी बड़ी, या सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है हमारी पुरा-सम्पदा के प्रति जनता-समाज का दायित्व।

तो ऐसी विरासतों को कैसे सम्भाला जा सकता है, आपके?

हमारा विभाग देश में तीन हजार से भी ज्यादा विशालतम पुरा-सम्पत्तियों की निगरानी करता है। यह बहुत बड़ा दायित्व है। हम इतना ही कर लें, तो बहुत है। वैसे हमारे देश भर में पुरा-सम्पत्तियां बेशुमार पड़ी हैं। गांव, जवार, गली-मोहल्ले में आपको पुरातत्व सम्पत्तियां मिल जाएंगी, और कई जगहों पर अतिक्रमण हो जाता है, जहां चोरी हो जाती है। यकीन मानिये कि हम भरसक कोशिश करते हैं कि इन्हें सम्भालें। लेकिन हमारे पास संसाधन भी इतने नहीं। ऐसे में गांव-पंचायत, ग्रामीण और समाज को भी अपनी पुरातत्व विरासतों के प्रति दायित्व भाव जगाना होगा।

और भित्ति चित्रों और फॉसिल की हालत?

मैं मानता हूं कि ऐसे भित्ति-चित्रों की हालत कहीं कहीं खराब है। मिर्जापुर, सोनभद्र, इलाहाबाद और बांदा में सैंड-स्टोन की चट्टानों-गुफाओं में बने इन

2 / 4

वर्ल्ड हेरिटेज की लाइन में है वाराणसी, लखनऊ का ईमामबाड़ा और सारनाथ

Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 21 May 2014 07:57

चित्र वाकई बेमिसाल है। आस्ट्रेलिया के काकादू नेशनल पार्क ने तो अपने ऐसे इलाके को बाकायदा संरक्षित कर लिया है, लेकिन हमारे यहां यह काम कर पाना बेहद मुश्किल है। वजह यह कि हमारे यहां इलाका ज्यादा विशाल है और उस पर तुर्रा यह कि इस इलाके पर आबादी की सघनता बेहद और बेकाबू भी है। ऐसे में जन-जागरूकता ही महत्वपूर्ण है। ग्राम-सभा, ग्रामीण और क्षेत्र के जागरूक लोगों में इस बारे में जिम्मेदारी बढ़ानी होगी।

छतरमंजिल खाली कराना तो आपकी उपलब्धि है?

नहीं, इसके लिए तो हमारे तत्कालीन अधिकारियों और उनके बाद के उत्तराधिकारियों को इसका श्रेय जाता है।

उप्र में पुरातत्व सम्पत्तियों की हालत ठीक नहीं बतायी जाती है। मसलन चिड़ियाघर स्थित अजायबघर में रखी ममी की हालत खराब है।

यह मेरे विभाग का काम नहीं है। हां, मैं कुछ समय तक यहां का पदेन निदेशक रहा हूं और इसीलिए मुझे पता है कि यहां रखी ममी की एक पैर का अंगूठा खुल गया है। हालांकि यह कोई खतरनाक बात नहीं है, लेकिन भविष्य में हो भी सकती है। और जहां तक मुझे जानकारी है, सरकार ने इसके लिए विशेषज्ञों की एक टीम बनायी है और जरूरत पड़ी तो यह टीम मिस्र जाकर मदद मांग सकती है।

उन्नाव वाले डौंडियाखेड़ा का उत्खनन काफी विवादों में रहा। आपकी राय?

कोई टिप्पणी नहीं

पुरातत्व क्षेत्र की नीति पर आपका क्या मानना है?

यह सही है कि देश में पुरातात्विकी के विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए ज्यादा संसाधन मुहैया कराया जाना चाहिए। लेकिन मैं मानता हूं कि केवल निधि बढ़ा देना ही महत्वपूर्ण नहीं होगा। हमें विशेषज्ञों की फौज की जरूरत पड़ेगी। ताकि एजूकेशन इम्प्लायमेंट हो सके। हमें निधि से ज्यादा तो एक्सपर्टीज की जरूरत है।

आपकी प्राथमिकताएं?

3 / 4

वर्ल्ड हेरिटेज की लाइन में है वाराणसी, लखनऊ का ईमामबाड़ा और सारनाथ

Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 21 May 2014 07:57

हमारा संगठन पुरातात्विक शोध के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा केंद्र है। मेरी कोशिश होगी कि इसमें संवर्द्धन हो, ताकि नयी पौध को मजबूत किया जाए। हम सभी इस काम के लिए अपने अनुभवों को समर्पित करेंगे। सर्वेक्षण, उत्खनन, संरक्षण और जानकारियों का प्रकाशन हमारी प्राथमिकताओं में है।

श्री राकेश तिवारी के साथ हुई यह बातचीत लखनऊ से छपने होने वाले दैनिक डेली न्यूज एक्टिविस्ट समाचार**-**पत्र के **21** मई **-14** के अंक में प्रकाशित हो चुका है।

4 / 4